



डी आर डी ओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

स्वदेशी वेंकल रोटरी इंजन का विकास

प्रथम बार वेंकल रोटरी इंजन का स्वदेशी अभिकल्पन तथा विकास किया गया है। इसका विकास कार्य वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर द्वारा आरम्भ किया गया था। इसके विकास में एन ए एल, बैंगलूरु तथा वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलूरु ने भी योगदान दिया है।

प्रक्षेपण स्थल पर आयोजित समारोह में क्षेत्रीय सैन्य उड़नयोग्यता केंद्र (आर सी एम ए) द्वारा प्रथम स्वदेशी प्रोटोटाइप

इस अंक में

- स्वदेशी वेंकल रोटरी इंजन का विकास
- कवचीय अभियांत्रिक टोही वाहन ए ई आर वी
- राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस
- निम्न-स्तर युद्ध पर डी आर डी ओ सैन्य कार्यशाला
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- पेटेंट अनुमोदित
- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
- एस बी एम टी उद्योग वार्तालाप
- अग्नि सेवा सप्ताह
- सी वी आर डी ई एवं अन्ना विश्वविद्यालय के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर
- डी आर डी ओ द्वारा फाइबर ऑप्टिक गायरोस्कोप अभिकल्पन एवं संरचना हेतु एम आई ओ सी
- डी आर डी ओ द्वारा पिरियोडिक पोलिंग प्रौद्योगिकी की स्थापना
- एच ई एम आर एल, आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित
- खेलकूद समाचार
- पी एक्स ई को राजभाषा सम्मान
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण



वेंकल रोटरी इंजन।

इंजन को अनेक थल तथा योग्यता परीक्षणों के पश्चात अंतरिम उड़ान स्वीकृति प्रदान की गई। ए डी ई, बैंगलूरु में प्रथम बार

मानवरहित वायुवाहन (यू ए वी) निशांत का स्वदेशी रोटरी इंजन के साथ सफल उड़ान परीक्षण किया गया।

उड़ान परीक्षण 31 मार्च 2009 को 11:57 बजे हुआ। परीक्षण के दौरान यू ए वी ने 1.8 किमी ऊंचाई प्राप्त की तथा 35 मिनट लगातार उड़ान भरकर पूर्व निर्धारित स्थान पर इसे सुरक्षित प्राप्त कर लिया गया। उड़ान परीक्षण के समय श्री पी एस कृष्णन, निदेशक, ए डी ई, बैंगलूरु; डॉ सी एल धमेजानी, निदेशक, वी आर डी ई, अहमदनगर ; डॉ ए आर उपाध्याय, निदेशक, एन ए एल मौजूद थे।



मानव रहित विमान निशांत

कवचीय अभियांत्रिक टोही वाहन



मेजर जनरल सैयद नुरुला शाह ए डी जी (ई एस), ए ई आर वी को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए। साथ में हैं मेजर जनरल उमंग कपूर, विशिष्ट सेवा मेडल, निदेशक, सी टेक ; ब्रिगेडियर पी एन अवस्थी, नियंत्रक, सी क्यू ए (आई सी वी) ; डॉ सी एल धमेजानी, निदेशक, वी आर डी ई ; तथा श्री एन एम कंडास्वामी, नियंत्रक सी क्यू ए (वी) ।

सेना द्वारा अभियंता कोर हेतु 16 कवचीय अभियांत्रिकी टोही वाहनों (ए ई आर वी) का सीमित-श्रृंखला उत्पादन आपूर्ति आदेश वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर को दिया गया था। ए ई आर वी का अभिकल्पन थलीय तथा नदियों के किनारों के सर्वेक्षण एवं जलीय रुकावटों पर पुल बनाने के लिए किया गया है। यह उपकरण बी एम पी-II समाघात वाहन पर आधारित है। यह उपकरण जल तथा थल प्रचालन में सक्षम है।

मेजर जनरल एस एन शाह, ए डी जी (ई एस) ने 10 अप्रैल 2009 को 15वें तथा 16वें ए ई आर वी को एल एस पी-1 से झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर मेजर जनरल उमंग कपूर, विशिष्ट सेवा मेडल, निदेशक, सी टेक ; ब्रिगेडियर पी एन अवस्थी, नियंत्रक, सी क्यू ए (आई सी वी) ; तथा श्री एन एम कंडास्वामी, नियंत्रक सी क्यू ए (वी) भी उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य विभूतियों को चल रही परियोजनाओं तथा प्रदर्शित वाहनों के विषय में जानकारी भी दी गई।

प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं पर विशेषांक

डी आर डी ओ समाचार में डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं पर विशेषांक हेतु डी आर डी ओ समाचार के माध्यम से जनमानस/सरकारी संस्थानों/वैज्ञानिक संस्थानों/विभिन्न विश्वविद्यालयों को डी आर डी ओ के विषय में अधिक जागरूक करने के संबंध में सभी प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं पर विशेषांक प्रकाशित करने का प्रस्ताव है। इससे आपकी प्रयोगशाला/स्थापना के बारे में अधिक एवं सही सूचना का प्रसार होगा, जिससे आपकी प्रयोगशाला/स्थापना में हो रहे विभिन्न रक्षा एवं जनोपयोगी अनुसंधानों के विषय में सही परिप्रेक्ष्य में जानकारी उपलब्ध करायी जा सकेगी। विशेषांक हेतु कृपया विभिन्न गतिविधियों से संबंधित उत्तम चित्र तथा सामग्री यथाशीघ्र भेजने का प्रयास करें। इसे हम आगामी अंकों में प्रकाशित करने का भरसक प्रयास करेंगे। प्रयोगशाला विशेषांक श्रृंखला में अभी तक फरवरी 2008 में ए आर डी ई, पुणे, मई 2008 में डी एल, जोधपुर, तथा फरवरी 2009 में डेसीडॉक, दिल्ली पर विशेषांक प्रकाशित किए जा चुके हैं।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस



राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह के उद्घाटन सत्र का दृश्य।

डी आर डी ओ द्वारा 11 मई 2009 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर भव्य आयोजन किया गया। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस को 11 मई 1998 में किए गए परमाणु परीक्षणों की स्मृति में मनाया जाता है। यह दिवस राष्ट्र की प्रौद्योगिकी सम्पन्नता का द्योतक है। डी आर डी ओ मुख्यालय तथा दिल्ली-स्थित डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं द्वारा मिलकर इसे भगवंतम सभागार, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली, में मनाया गया। इस समारोह का आयोजन रक्षा विज्ञान फोरम द्वारा किया गया। डॉ रवि कश्यप, समन्वयक, रक्षा विज्ञान फोरम ने उपस्थित विभूतियों का स्वागत किया। इस समारोह के मुख्य अतिथि डॉ डब्ल्यू सेल्वामूर्ति, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (जैव विज्ञान एवं मानव संसाधन) ने बताया कि यह अपने कार्य का मूल्यांकन करने की बेला है तथा राष्ट्र को प्रौद्योगिकीय शक्ति के रूप में उभारने हेतु आवश्यकताओं पर मंथन का अवसर भी है। इस अवसर पर मुख्य नियंत्रकगण, तकनीकी तथा कॉरपोरेट निदेशकगण, तथा दिल्ली-स्थित प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के निदेशकगण उपस्थित थे।

समारोह में प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यानों में से चुने गए तीन व्याख्यान प्रस्तुत किए गए : श्री एस हरिकृष्णन, वैज्ञानिक ई, आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे, द्वारा श्रेष्ठ चार्ज युद्धशीर्ष प्रौद्योगिकी में विकास ; डॉ टी बालाकृष्ण भट्ट, वैज्ञानिक जी, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद, द्वारा स्वदेशी कवचीय प्रौद्योगिकियों का विकास ; तथा श्री अनूप लाल शाह, वैज्ञानिक ई, लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली, द्वारा सामरिक शस्त्र अनुप्रयोग हेतु उष्माग्राही डिस्क लेजर में तकनीकी विकास।

इस अवसर पर डॉ सेल्वामूर्ति ने उपस्थित प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यानकर्ताओं को पदक प्रदान किए। इनमें दिल्ली-स्थित सभी प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के व्याख्यानकर्ता शामिल थे। डॉ सेल्वामूर्ति ने डी आर डी ओ विज्ञान दिवस प्रश्नोत्तरी तथा डी आर डी ओ निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। डॉ रवि कश्यप, समन्वयक, रक्षा विज्ञान फोरम ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डी आर डी ओ

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी आर डी ओ), रक्षा मंत्रालय के रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के अंतर्गत कार्य करता है। डी आर डी ओ रक्षा प्रणालियों में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए समर्पण भाव से कार्य करता है। यह तीनों सेनाओं द्वारा मांगी गई गुणात्मक आवश्यकताओं के अनुसार विश्वस्तरीय शस्त्र प्रणालियों एवं उपकरणों के अभिकल्पन, विकास, एवं उत्पादन में संलग्न है।

निम्न-स्तर युद्ध पर डी आर डी ओ सैन्य कार्यशाला

उत्तर-पूर्व क्षेत्र में निम्न-स्तर युद्ध में कार्यरत भारतीय सेना के कमांडरों तथा अधिकारियों के साथ गजराज कोर, तेजपुर मुख्यालय में 18 अप्रैल 2009 को डी आर डी ओ वैज्ञानिकों की द्वितीय सैन्य कार्यशाला का आयोजन किया गया। डी आर डी ओ की ओर से मुख्यतः जैव विज्ञान क्षेत्र के वैज्ञानिकों ने इसमें भाग लिया। इस कार्यशाला का आयोजन मुख्यालय 4-कोर तथा डी आर डी ओ द्वारा मिलकर किया गया था। कार्यशाला का उद्देश्य वैज्ञानिकों तथा सैनिकों को एक मंच पर लाना था जिससे कि वैज्ञानिक, सैनिकों के समक्ष आने वाली प्रचालन संबंधी कठिनाइयों को समझ कर उनके निदान हेतु दीर्घकालीन स्वदेशी तथा कम लागत वाली प्रौद्योगिकियां विकसित करें। लेफ्टिनेंट जनरल के टी पटनायक, वाई एस एम, जी ओ सी, गजराज कोर द्वारा कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। डॉ आर सी साहनी, निदेशक, जैव विज्ञान निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय, नई दिल्ली, ने डी आर डी ओ दल का नेतृत्व किया, इनमें अनेक सामरिक क्षेत्रों जैसे कि आयुध, समाघात वाहन, इलैक्ट्रो-ऑप्टिक तथा रात्रि-दृष्टि उपकरण तथा जीवन-रक्षक प्रणाली, इत्यादि के वैज्ञानिक शामिल थे।



पहली पंक्ति में, बायीं ओर से, लेफ्टिनेंट जनरल के टी पटनायक, वाई एस एम, जी ओ सी, 4-कोर ; डॉ आर सी साहनी, निदेशक, जैव विज्ञान निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय, नई दिल्ली ; डॉ मानस कुमार मंडल, निदेशक, डी आई पी आर, दिल्ली (चौथे) तथा वरिष्ठ सैन्य अधिकारी।

लेफ्टिनेंट जनरल पटनायक ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि भारतीय सेना को उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में निम्न स्तरीय युद्ध के दौरान अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। आपने बताया कि सेना, डी आर डी ओ, उद्योग जगत, तथा अकादमिक क्षेत्र के मध्य अधिक सहयोग की आवश्यकता है जिनसे हमें बेहतर प्रौद्योगिकियां तथा उत्पाद प्राप्त हो सकते हैं। इस अवसर पर डॉ साहनी ने अपने सम्बोधन में डी आर डी ओ द्वारा विकसित नवीनतम प्रौद्योगिकियों तथा उत्पादों पर प्रकाश डालते हुए सेना से और अधिक सहयोग का आह्वान भी किया।

इस अवसर पर डॉ वी आर गांधे, निदेशक, आयुध ; डॉ मानस कुमार मंडल, निदेशक, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली ; डॉ भुवनेश कुमार, सह-निदेशक, जैव विज्ञान ; तथा श्री एस एस सुंदरम, निदेशक, यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून द्वारा डी आर डी ओ द्वारा विकसित नवीनतम प्रौद्योगिकियों तथा उत्पादों के विषय में प्रस्तुतियां भी दी गईं। इन प्रस्तुतियों में निम्न-स्तर युद्ध में प्रयुक्त शस्त्रों/प्रौद्योगिकियों पर विशेष बल दिया गया तथा भविष्य की योजनाओं पर भी प्रकाश डाला गया। कार्यशाला में रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूर ; रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली ; नाभिकीय औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली; रक्षा जैव-अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा-इलैक्ट्रो प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलूरु, के निदेशकगणों तथा रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर ; इनमास, दिल्ली ; रक्षा जैव ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डिबेर), पिथौरागढ़ ; डी आई पी आर, दिल्ली ; तथा रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने भी भाग लिया। सेना की ओर से ब्रिगेडियर आर सहगल, डी डी एम एस, मुख्यालय 4 कोर ; कर्नल सर्वेश शर्मा, 46 असम राइफल, तथा मेजर वी जी शर्मा ने निम्न स्तर युद्ध की आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला। कर्नल एस आर वर्मा, डी आर एल, तेजपुर, कार्यशाला समन्वयक थे। कार्यशाला में सेना की विभिन्न इकाइयों से लगभग 100 अधिकारियों ने भाग लिया। इन सभी ने डी आर डी ओ वैज्ञानिकों से गहन विचार-विमर्श किया। ब्रिगेडियर अरुण कुमार, मुख्य सिग्नल अधिकारी, मुख्यालय 4-कोर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

पाठ्यक्रम / सम्मेलन / कार्यशाला / संगोष्ठी

एकीकृत परीक्षण परिसर, चांदीपुर

एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर में 25-27 मार्च 2009 के दौरान डी आर डी ओ में आपातकालीन तैयारी तथा प्रतिक्रिया नामक विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। छः डी आर डी ओ स्थापनाओं तथा कॉरपोरेट निदेशालयों से 42 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। संगोष्ठी में रेंज सुरक्षा दार्शनिकता, स्थल-सुरक्षा योजना, प्रमुख लॉच कैम्पेन के दौरान आपातकालीन तैयारी, व्यवहारिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा आपातकालीन योजना का परिचय, समेकित आपदा प्रबंधन रणनीति की आवश्यकता, परीक्षण एवं मूल्यांकन के दौरान प्रूफ रेंज की आपातकालीन प्रबंधन योजना, उड़ान वाहनों के परीक्षण एवं मूल्यांकन के दौरान टॉक्सिक एक्सोस्ट के वातावरणीय कुप्रभाव, विस्फोटक भवनों में अग्नि सुरक्षा मापक यंत्र, अत्यधिक विस्फोटकों के परीक्षण एवं मूल्यांकन के दौरान आपातकालीन सुरक्षा मापक, रेंज एवं सुरक्षा मापकों में लेजर खतरा, आपदा प्रबंधन हेतु संचार तैयारी, वातावरण सुरक्षा नियम 1986 एवं वातावरण प्रभावी मूल्यांकन की मुख्य विशेषताएं, सक्षमता-आधारित मानव संसाधन विकास के जरिये प्रभावी आपदा प्रबंधन तथा ग्रामीण अधिकारिता एवं आपदा अल्पीकरण हेतु डी आर डी ओ द्वारा विकसित खाद्य एवं सब्जियों के लिए नवीन प्रौद्योगिकियों की महत्ता, इत्यादि विषयों को शामिल किया गया। श्री एम वी भास्कराचार्य, वैज्ञानिक जी, सह-निदेशक, ने इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया। डॉ महेन्द्र सिंह, निदेशक, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय, नई दिल्ली, ने दो तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता एवं समापन समारोह की अध्यक्षता की। संगोष्ठी के संरक्षक, डॉ एस पी दास, निदेशक, आई टी आर, ने आयोजन समिति के कार्यों की प्रशंसा की, जिसके प्रमुख थे श्री पी सी राउत्रे, वैज्ञानिक एफ। श्री आर के बहेरा, वैज्ञानिक ई ; डॉ एस के साहू, वैज्ञानिक सी ; तथा श्री आई एम झा, तकनीकी अधिकारी सी, समूह निदेशक, समन्वयक थे।

चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, चंडीगढ़

चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़ रेंज रामगढ़ में 16-20 मार्च 2009 के दौरान कम्प्यूटर सहायित गुणवत्ता नियंत्रण पर एक अनुवर्ती शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। टी बी आर एल से बीस तथा अन्य साथी प्रयोगशालाओं से चार प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। टी बी आर एल के दस संकाय सदस्यों के अलावा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), कानपुर एन आर टी सी, परवानू तथा रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद के विशेषज्ञों ने अपने व्याख्यान दिए। कार्यक्रम में शामिल विषय थे, गुणवत्ता हेतु अभिकल्पन, कम्प्यूटर सहायित परीक्षण, सरफेस एवं फोर्म मैट्रोलॉजी, पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन, अनिर्मित परीक्षण, ज्यामितीय मॉडलिंग तकनीकें, सांख्यिकीय गुणवत्ता नियंत्रण, समन्वय मैट्रोलॉजी में उन्नयन, गैर संविदा मैट्रोलॉजी इत्यादि।

वेल्लामल प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई में व्याख्यान

डॉ ए के सिकदर, संयुक्त निदेशक, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे को 28 मार्च 2009 को वेल्लामल प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई के प्रथम वार्षिक दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। आपने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं प्रशंसा-पत्र प्रदान किए।

इस अवसर पर डॉ सिकदर ने राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में अभियंताओं की भूमिका पर एक व्याख्यान दिया तथा राष्ट्र के विकास में व्यवसायिक मानव संसाधन की महत्ता पर प्रकाश डाला। आपने राष्ट्र

के महत्वपूर्ण अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रमों, जैसे रक्षा एवं वांतरिक्ष अनुप्रयोग में अभियांत्रिकी संस्थानों की भागीदारी की विस्तृत व्याख्या की। आपने निकट भविष्य में शीर्ष शक्ति बनने के लिए डी आर डी ओ/सेवाओं में अभियंताओं/प्रौद्योगिकीविदों की आवश्यकता पर बल दिया।

व्याख्यान

डॉ मानस कुमार मंडल, निदेशक, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डी आई पी आर), दिल्ली ने 15 अप्रैल 2009 को डी आई पी आर, दिल्ली में अनुसंधान तथा विकास में उत्पादकता में बढ़ोत्तरी हेतु वैज्ञानिक कार्यप्रणाली में प्रोत्साहन के पहलू एवं आपसी समझ व्यवहार पर व्याख्यान दिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रभाग, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़ में 12 मार्च 2009 को सुरक्षा सर्कल प्रशिक्षण केन्द्र, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद द्वारा सुनहरी घंटों में मानव जीवन को बचाने के लिए जीवन बचाव तकनीकें एवं आघात प्रबंधन पर आपातकालीन रेस्पॉंस देखभाल प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री मनप्रीत सिंह, वैज्ञानिक एफ ने स्वागत सम्बोधन दिया। सुरक्षा सर्कल के प्रबंधन निदेशक, श्री बी पी एस बख्शी, ने पाठ्यक्रम का परिचय दिया। टी बी आर एल के कार्मिकों को पच्चीस के समूह में प्रशिक्षण दिया गया। इस पाठ्यक्रम सी पी आर, जीवन बचाव तकनीकें, आघात प्रबंधन मॉड्यूल, घायलों का वहन तथा बचाव, विस्फोट से उत्पन्न चोटों का प्रबंधन, अग्नि सुरक्षा, तनाव कम करने हेतु शारीरिक मुद्रा प्रबंधन इत्यादि विषयों को शामिल किया गया। 14 मार्च 2009 को अधिकारियों की पत्नियों के लिए बोमी, टी बी आर एल, अतिथि गृह में एक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।

पेटेंट अनुमोदित

अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र, दिल्ली

अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस), दिल्ली के साथ संयुक्त रूप से नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एन एम आर एल), अंबरनाथ के ए प्रोसेस फॉर प्रीप्रेसन ऑफ एन इंटुमेसेंट फायर रिटारडेंट पेंट कम्पोजिशन नामक पेटेंट को भारतीय पेटेंट कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित किया गया है। सीफीस, दिल्ली से श्री हुकम सिंह कपरवान एवं किरन पाल ; तथा एन एम आर एल, अंबरनाथ से यादवेन्द्र पाल सिंह निर्वाण, पदमावती शिवशंकर दास एवं सुशील संतराम पवार इसके आविष्कारक हैं।

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद के ए प्रोसेस फॉर प्रोडक्शन ऑफ मेटल मैट्रिक्स कम्पोजिट बिलेट्स रेनफोर्सड विद सिलिकॉन कार्बाइड एंड प्रोसेस देयरऑफ (पेटेंट सं० 230895) नामक पेटेंट को भारतीय पेटेंट कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा फरवरी 2009 से अनुमोदित किया गया है। डॉ के शिवकुमार एवं डॉ टी बालकृष्ण भट्ट इसके आविष्कारक हैं।

पुरस्कार

श्री के जयप्रकाश राव, क्षेत्रीय जनसम्पर्क अधिकारी दक्षिण, बेंगलूरु को जनसम्पर्क क्षेत्र एवं जन सेवा में सक्रिय रूप से लम्बे सहयोग के लिए 03-04 अप्रैल 2009 के दौरान भारतीय जनसम्पर्क परिषद द्वारा सर्वोत्तम सक्रिय सदस्य पुरस्कार 2008 से सम्मानित किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला, पुणे

एफ ई एम ट्रांसेंड, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे ने 30 मार्च 2009 को स्वस्थ शरीर स्वस्थ मस्तिष्क विषय पर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। समारोह का उद्देश्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा करना था। डॉ अलका पवार, निदेशक, महाराष्ट्र मानसिक विज्ञान संस्थान, मुख्य अतिथि थीं, जिन्होंने इसका उद्घाटन किया। डॉ पवार ने वर्तमान वातावरण में जहां सांस्कृतिक बाध्यताएं अत्यंत सुदृढ़ हैं, मस्तिष्क की सशक्तता की आवश्यकता बताई। प्रोफेसर (डॉ) गिरिजा वाघ, प्रमुख, भारतीय विद्यापीठ, सम्मानीय अतिथि ने महिलाओं से अपने अधिकारों एवं अपने कर्तव्यों का बोध कर सशक्त बनाने की अपील की तथा कहा कि यह समय अपने आपको स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने का है।



सुश्री एच के पन्नू एफ ए (डी एस) मुख्य अतिथि, उद्घाटन उद्बोधन देते हुए।

डॉ ए शुभनंदा राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एच ई एम आर एल ने एच ई एम आर एल महिला परिषद द्वारा चलाई जा रही सभी गतिविधियों की प्रशंसा की तथा उनको प्रत्येक क्षेत्र में सशक्त बनने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर, मुख्य अतिथि ने एच ई एम आर एल की महिला गतिविधियों की झलकियों वाली सी डी का विमोचन किया। महिला दिवस समारोह के एक भाग के रूप में, एच ई एम आर एल महिला परिषद ने जनकल्याण रक्त बैंक द्वारा एक रक्त दान शिविर का आयोजन किया। मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये। एफ ई एम ट्रांसेंड, की सचिव, सुश्री संचिता सिल ने इस समारोह का संचालन किया।

चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, चंडीगढ़

चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़ ने 09 मार्च 2009 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। डॉ सतीश कुमार, निदेशक, टी बी आर एल, ने स्वागत सम्बोधन दिया। सुश्री एच के पन्नू वित्त सलाहकार (डी एस), मुख्य अतिथि थीं, जिन्होंने उद्घाटन सम्बोधन दिया।

प्रोफेसर निहारिका वोहरा, भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद, प्रोफेसर एल के धालीवाल, प्रभाग प्रमुख, स्त्री एवं प्रसूति रोग, पी जी आई एम ई आर एवं सुश्री जी रोहिणी देवी, प्रौद्योगिकी निदेशक, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद, ने आमंत्रित वार्ताएं दीं।



प्रोफेसर निहारिका वोहरा, भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद, वक्तव्य देते हुए।

एस बी एम टी उद्योग वार्तालाप

रक्षा जैव अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा-इलेक्ट्रो प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलूरु, जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी समिति की समन्वयक एजेंसी है। भारत में स्वास्थ्य देखभाल की बढ़ोत्तरी के लिए यह एक अंतर्मंत्रालय प्रयास है, इसका प्रयास है कि जनसाधारण को उचित कीमत पर स्वदेशी चिकित्सा उपकरण एवं प्रौद्योगिकियां उपलब्ध कराई जाए।

डेबेल, बेंगलूरु, में 07 मार्च 2009 को एस बी एम टी उद्योग वार्तालाप कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य संभावित चिकित्सा देखभाल उद्योगों की पहचान करना था, साथ ही अकादमिक एवं अनुसंधान तथा विकास संस्थानों को एस बी एम टी द्वारा निधि प्रदान की जाएगी जो उत्पाद विकास चक्र में साझीदार होंगे। 26 कम्पनियों के लगभग 40 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया।

डॉ वी सी पदकी, निदेशक, डेबेल, एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एस बी एम टी ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया तथा एस बी एम टी, इसके इतिहास एवं गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। आपने जैवचिकित्सा उपकरणों के आयात तथा स्वदेशी उत्पादों की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ वी के आत्रे, अध्यक्ष एम बी एम टी सलाहकार परिषद तथा रक्षा मंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार, ने कार्यशाला तथा डेबेल-एस बी एम टी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन सम्बोधन में डॉ आत्रे ने मानवता के इतिहास में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का विकास तथा सभी क्षेत्रों में मानवता हेतु इसके लाभों को शामिल किया। आपने डी आर डी ओ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान एवं अन्य अकादमिक संस्थानों में उपलब्ध विशेषज्ञों तथा सामग्री, कम्प्यूटर अनुरूपण, एवं सॉफ्टवेयर जैसे क्षेत्रों में राष्ट्र की समृद्धता पर बल दिया।

डॉ डब्ल्यू सेल्वामूर्ति, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (जैव विज्ञान एवं मानव संसाधन) तथा सह-अध्यक्ष, एम बी एम टी सलाहकार परिषद ने एस बी एम टी के स्थापन से आज तक की गतिविधियों पर मुख्य सम्बोधन दिया। राष्ट्र में जैव-चिकित्सीय उत्पादों के बाजार के बारे में जानकारी दी जिसमें उद्योग जगत के प्रतिनिधियों को इसके द्वारा लाभान्वित होने के बारे में बताया गया। सभी प्रतिनिधियों को डेबेल तथा एस बी एम टी के तत्वावधान में विकसित उत्पादों को प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाया गया। इसके बाद उत्पादों का प्रचालन भी दिखाया गया तथा पैनल चर्चा का आयोजन भी किया गया।

अग्नि सेवा सप्ताह

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर में 15-20 अप्रैल 2009 के दौरान अग्नि सेवा सप्ताह मनाया गया। यह बॉम्बे फायर ब्रिगेड के 66 कार्मिकों की याद में प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है जिन्होंने एक जहाज में आग से लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया, इस जहाज में विस्फोटक एवं गोला-बारूद ले जाया जा रहा था जिसके कारण बाद में 14 अप्रैल 1944 को विक्टोरिया डॉक, मुम्बई में कुल 740 जानें गईं। लेफ्टिनेंट कर्नल ए मुखर्जी, वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी द्वारा आयोजित अग्नि बचाव कर्तव्य एवं आपातकालीन निकास नामक प्रशिक्षण में इस वर्ष पी एक्स ई के 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में कर्नल एस समंत्रे, संयुक्त निदेशक एम ए टी एस, ने सफल प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए।



अग्नि कवच की सक्षमता का प्रदर्शन।

सी वी आर डी ई एवं अन्ना विश्वविद्यालय के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई तथा अन्ना विश्वविद्यालय के बीच 28 फरवरी 2009 को अन्ना विश्वविद्यालय में एक तीन दिवसीय समाघात वाहन एवं अभियांत्रिकी प्रदर्शनी के उद्घाटन के दौरान समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गये। श्री एस सुंदरेश, निदेशक, सी वी आर डी ई, तथा श्री मन्नार जवाहर, कुलपति, अन्ना विश्वविद्यालय ने प्रलेखों पर हस्ताक्षर किए। डॉ ए शिवथानु पिल्लई, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (नौसेना प्रणाली एवं आयुध समाघात अभियांत्रिकी) तथा मुख्य कार्यकारी, ब्रह्मोस ऐरोस्पेस ने समारोह की अध्यक्षता की। समझौता ज्ञापन से वाहन गतिकीय, सेंसर एवं सेंसर प्रणालियों, तनाव विश्लेषण परीक्षण, तथा अन्य क्षेत्रों के विषय में आधारभूत तथा विशेषज्ञ जानकारी का आदान-प्रदान संभव हो पाएगा।



डॉ ए शिवथानु पिल्लई की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए श्री एस सुंदरेश, निदेशक, सी वी आर डी ई, तथा श्री मन्नार जवाहर, कुलपति, अन्ना विश्वविद्यालय।

डी आर डी ओ द्वारा फाइबर ऑप्टिक गायरोस्कोप हेतु एम आई ओ सी का अभिकल्पन तथा निर्माण

डी आर डी ओ द्वारा फाइबर ऑप्टिक गायरोस्कोप हेतु बहु अवयव समेकित ऑप्टिक चिप (एम आई ओ सी) का प्रथम बार अभिकल्पन तथा निर्माण किया गया है। डी आर डी ओ द्वारा अनेक समेकित ऑप्टिक अवयवों एवं उपकरणों हेतु ऑप्टिकल चिप स्तर की प्रौद्योगिकी के अभिकल्पन तथा विकास हेतु नवीनतम सुविधा का स्थापन किया गया है। इस एम आई ओ सी में पोलराइजर, 3-डी बी स्प्लिटर तथा फेस मॉड्युलेटर को एक लिथियम नायोबेट चिप पर समेकित किया गया है।



फाइबर ऑप्टिक गायरोस्कोप हेतु बहु-अवयव समेकित ऑप्टिक चिप।

एम आई ओ सी, एफ ओ जी का मुख्य अवयव है। वर्तमान में, एफ ओ जी को अनेक अवयवों को मिलाकर बनाया जाता है जो कि काफी भारी है। परन्तु प्रक्षेपास्त्रों में प्रयोग हेतु छोटे आकार का होना बहुत आवश्यक है। एम आई ओ सी आधारित एफ ओ जी छोटे आकार के हल्के, कम उर्जा की खपत करने वाले तथा परम्परागत एफ ओ जी के मुकाबले अधिक विश्वसनीय हैं। एम आई ओ सी को लिथियम नायोबेट वेफर पर स्थापित करने में फोटोलिथोग्राफी पी एल जी, डिफ्यूजन, मेटेलाइजेशन, तथा प्रोटोन विनिमय तकनीक का प्रयोग किया गया है। पूरी एम आई ओ सी के निर्माण हेतु श्रेणी 100 पर्यावरण में तीन स्तरीय पी एल जी का प्रयोग किया गया है।

डी आर डी ओ द्वारा पिरियोडिक पोलिंग प्रौद्योगिकी स्थापित

डी आर डी ओ द्वारा नवीनतम पिरियोडिक पोलिंग प्रौद्योगिकी (विश्व भर में गोपनीय प्रौद्योगिकी का) स्थापन तथा डोमेन अभियांत्रिकी द्वारा पिरियोडिकली पोलड लिथियम नायोबेट (पी पी एल एन) चिप का प्रथम बार निर्माण किया गया है। इन पी पी एल एन के ऑप्टिकल पैरामैट्रिक ओसीलेटर (ओ पी ओ), सेकेंड हारमोनिक जनरेटर (एस एच जी) तथा नॉनलिनियर वेवगाइड-आधारित उपकरण के क्षेत्र में अनेक अनुप्रयोग हैं।

पिछले कुछ वर्षों में इन स्रोतों का उपयोग रासायनिक/जैविक एजेंटों का पता लगाने में किया गया है। डोमेन अभियांत्रिकी प्रक्रिया में बारिक पतली लिथियम नायोबेट वेफर के पार उच्च इलैक्ट्रिक फील्ड तरंग प्रवाहित की जाती है। लिथियम नायोबेट वेफर की पूरी सतह पर समरूप पोलिंग प्राप्त करने के लिए पोलिंग वेवफार्म के साथ अनुप्रयोग विशेष पोलिंग सर्किट का अभिकल्पन कर इलैक्ट्रिक फील्ड प्रयोग की जाती है। फैंड तथा मल्टी ग्रेटिंग पी पी एल एन चिप्स का 50 मिलीमीटर लम्बाई में निर्माण सफलतापूर्वक किया गया है। इंफ्रारेड प्रतिरक्षात्मक अनुप्रयोगों हेतु ओ पी ओ की आवश्यकता है जो कि ट्यूनेबल आउटपुट वेवलेंथ उत्पन्न कर सकें।



फैंड ग्रेटिंग पी पी एल एन चिप्स



मल्टी ग्रेटिंग पी पी एल एन चिप्स

एच ई एम आर एल को आई एस ओ 9001 : 2008 प्रमाणन

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे को हाल ही में ऑडिट पश्चात् आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणन प्राप्त हुआ है। यह ऑडिट टी यू वी दक्षिण एशिया प्रा. लि. द्वारा किया गया। इस प्रमाण-पत्र का दायरा उच्च उर्जा पदार्थों जिनमें ठोस/द्रव्य प्रणोदक, बड़े विस्फोटक, पायरोटेक्नीक्स तथा सम्बद्ध रसायनों पर शोध, अभिकल्पन तथा विकास, परीक्षण तथा मूल्यांकन तक सीमित है।

इस प्रमाणन से प्रयोगशाला को रक्षा सेवाओं को उपलब्ध कराए जाने वाले उत्पादों की गुणवत्ता राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। प्रबंधन प्रतिनिधि श्री एस सी अगलावे, उपनिदेशक, एच ई एम आर एल ने इस प्रमाण-पत्र को प्राप्त करने के लिए मुख्य भूमिका का निर्वहन किया है, आपको इस दौरान डॉ ए शुभनंदा राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, तथा निदेशक, एच ई एम आर एल के कुशल मार्गनिर्देशन का लाभ भी प्राप्त हुआ। इससे पूर्व प्रयोगशाला को आई एस ओ 9001:1994 प्रमाणन अगस्त 1999 में, आई एस ओ 9001:2000 प्रमाणन सितम्बर 2002 में तथा पुनः प्रमाणन सितम्बर 2005 में प्राप्त हैं।

खेलकूद समाचार

क्रिकेट प्रतियोगिता

चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़ ने रामगढ़, चण्डीगढ़ में 04-06 मार्च 2009 के दौरान डी आर डी ओ उत्तरी क्षेत्र क्रिकेट प्रतियोगिता तथा डी आर डी ओ राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया। डॉ सतीश कुमार, निदेशक, टी बी आर एल तथा अध्यक्ष, उत्तरी क्षेत्र खेल परिषद ने इसका उद्घाटन किया। उत्तरी क्षेत्र प्रतियोगिता में विभिन्न प्रयोगशालाओं से बनाई गई सात टीमें थीं। उत्तरी क्षेत्र क्रिकेट प्रतियोगिता में विजेता टीम में एस एस पी एल, डी आई पी आर, डिपास, सीफीज तथा आर ए सी की



डॉ सतीश कुमार, निदेशक, टी बी आर एल का खिलाड़ियों से परिचय कराते
डॉ मनजीत सिंह, उपाध्यक्ष, डी आर डी ओ उत्तरी क्षेत्र खेल परिषद।

प्रयोगशालाओं के खिलाड़ी थे जबकि उप-विजेता टीम में लेसटेक, एस ए जी, डी टी आर एल, ईसा की प्रयोगशालाओं के खिलाड़ी थे। डी आर डी ओ राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता में मध्य क्षेत्र विजेता जबकि उत्तरी क्षेत्र उपविजेता रहीं।

पी एक्स ई को राजभाषा सेवा सम्मान 2009

उत्तर प्रदेश के झांसी शहर में हम सब साथ साथ, नई दिल्ली द्वारा 09 अप्रैल 2009 को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2009 में प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर को सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के बेहतर प्रयोग हेतु राजभाषा सेवा सम्मान 2009 से सम्मानित किया गया। इस सम्मेलन में स्थापना की ओर से राजभाषा अधिकारी, श्री आर डी कुण्डु, तकनीकी अधिकारी बी एवं श्रीमती अनीता परीडा, हिन्दी सहायिका ने भाग लिया। स्थापना के साथ-साथ हिन्दी सेवा के लिए कार्यरत श्रीमती अनीता परीडा को भी राजभाषा हिन्दी की सराहनीय सेवा के लिए हिन्दी सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया।



श्री आर डी कुण्डु, तकनीकी अधिकारी बी एवं श्रीमती अनीता परीडा, हिन्दी सहायिका, राजभाषा सेवा सम्मान प्राप्त करते हुए।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

रक्षा इलैक्ट्रोनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद



डॉ भूपति, निदेशक, डी एल आर एल एवं श्री बी विठ्ठल, वैज्ञानिक जी, सैन्य कार्यक्रमों/परियोजनाओं से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी देते हुए।

24 अप्रैल 2009 : डॉ आर श्रीहरि राव, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (इलैक्ट्रोनिक्स एवं कम्प्यूटर विज्ञान)।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला, पुणे

16 अप्रैल 2009 : डॉ पी एस गोयल, अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), दिल्ली।

28 अप्रैल 2009 : मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) रवि खेत्रपाल, विशिष्ट सेवा मेडल, अध्यक्ष, एवं प्रबंध निदेशक, बी डी एल, हैदराबाद।

इलैक्ट्रोनिक्स तथा रडार विकास स्थापना, बेंगलूरु

21 अप्रैल 2009 : श्रीमती एम हिमाबिन्दु, आई ए एवं ए एस, निदेशक, लेखा, वायु सेना।

आपको निदेशक, एल आर डी ई द्वारा एल आर डी ई में चल रही परियोजनाओं एवं गतिविधियों के बारे में बताया गया।

सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र, बेंगलूरु

03 अप्रैल 2009 : डॉ आर श्रीहरि राव, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (इलैक्ट्रोनिक्स एवं कम्प्यूटर विज्ञान)।

04 अप्रैल 2009 : डॉ पी एस गोयल, अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), दिल्ली तथा डॉ सुरेन्द्र पाल, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, इसरो।

वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना, अहमदनगर



डॉ पी एस गोयल, वी आर डी ई के उत्पादों में गहरी रुचि लेते हुए।

17 अप्रैल 2009 : डॉ पी एस गोयल, अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), दिल्ली।

मुख्य सम्पादक	सह मुख्य सम्पादक	सम्पादक	सह सम्पादक	सम्पादकीय सहायक	मुद्रण	विपणन
डॉ अ ल मूर्ति	शशी त्यागी	सुमति शर्मा	फूलदीप कुमार	अशोक कुमार	बी नित्यानंद एस के गुप्ता	एम जी शर्मा आर पी सिंह

डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली.110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23819151 ; ई-मेल : dirdesidoc@vsnl.net